

12P/275/31

(To be filled up by the candidate by blue/black ball-point pen)

Roll No.

--	--	--	--	--	--	--	--

Roll No. (Write the digits in words)

Serial No. of Answer Sheet

Day and Date

(Signature of Invigilator)

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

(Use only **blue/black ball-point pen** in the space above and on both sides of the **Answer Sheet**)

1. Within 10 minutes of the issue of the Question Booklet, check the Question Booklet to ensure that it contains all the pages in correct sequence and that no page/question is missing. In case of faulty Question Booklet bring it to the notice of the Superintendent/Invigilators immediately to obtain a fresh Question Booklet.
2. Do not bring any loose paper, written or blank, inside the Examination Hall *except the Admit Card without its envelope*.
3. *A separate Answer Sheet is given. It should not be folded or mutilated. A second Answer Sheet shall not be provided. Only the Answer Sheet will be evaluated.*
4. Write your Roll Number and Serial Number of the Answer Sheet by pen in the space provided above.
5. *On the front page of the Answer Sheet, write by pen your Roll Number in the space provided at the top and by darkening the circles at the bottom. Also, wherever applicable, write the Question Booklet Number and the Set Number in appropriate places.*
6. *No overwriting is allowed in the entries of Roll No., Question Booklet no. and Set no. (if any) on OMR sheet and Roll No. and OMR sheet no. on the Question Booklet.*
7. *Any change in the aforesaid entries is to be verified by the invigilator, otherwise it will be taken as unfairmeans.*
8. *Each question in this Booklet is followed by four alternative answers. For each question, you are to record the correct option on the Answer Sheet by darkening the appropriate circle in the corresponding row of the Answer Sheet, by pen as mentioned in the guidelines given on the first page of the Answer Sheet.*
9. For each question, darken only one circle on the Answer Sheet. If you darken more than one circle or darken a circle partially, the answer will be treated as incorrect.
10. *Note that the answer once filled in ink cannot be changed. If you do not wish to attempt a question, leave all the circles in the corresponding row blank (such question will be awarded zero marks).*
11. For rough work, use the inner back page of the title cover and the blank page at the end of this Booklet.
12. Deposit only **OMR Answer Sheet** at the end of the Test.
13. You are not permitted to leave the Examination Hall until the end of the Test.
14. If a candidate attempts to use any form of unfair means, he/she shall be liable to such punishment as the University may determine and impose on him/her.

12P/275/31

No. of Questions : 150

प्रश्नों की संख्या : 150

Time : 2 Hours

Full Marks : 450

समय : 2 घण्टे

पूर्णाङ्क : 450

Note : (1) Attempt as many questions as you can. Each question carries **3 (Three)** marks. **One mark will be deducted for each incorrect answer. Zero** mark will be awarded for each unattempted question.

अधिकाधिक प्रश्नों को हल करने का प्रयत्न करें। प्रत्येक प्रश्न **3 (तीन)** अंक का है। प्रत्येक गलत उत्तर के लिए एक अंक काटा जायेगा। प्रत्येक अनुत्तरित प्रश्न का प्राप्तांक शून्य होगा।

(2) If more than one alternative answers seem to be approximate to the correct answer, choose the closest one.

यदि एकाधिक वैकल्पिक उत्तर सही उत्तर के निकट प्रतीत हों, तो निकटतम सही उत्तर दें।

01. तत्त्वमिति पदेन किं निरस्यते ?

(1) यथार्थनुभवः (2) भ्रमज्ञानम् (3) यथार्थज्ञानम् (4) प्रमाज्ञानम्

02. प्रमाकरणं प्रमाणमिति -

(1) तार्किकाः (2) वेदान्तिनः (3) सांख्याः (4) बौद्धाः

03. अविसमवादि विज्ञानं प्रमाणमिति -

(1) जैनाः (2) बौद्धाः (3) नैयायिकाः (4) कापिलाः

12P/275/31

04. केषां प्रमाकरणत्वम् -

- | | |
|------------------------------|-----------------|
| (1) इन्द्रियसन्निकर्षादीनाम् | (2) गुणानाम् |
| (3) कर्मणाम् | (4) द्रव्याणाम् |

05. अज्ञाततत्त्वार्थज्ञानं तावत् -

- | | | | |
|-----------|------------|-----------|-----------|
| (1) प्रमा | (2) अप्रमा | (3) संशयः | (4) भ्रमः |
|-----------|------------|-----------|-----------|

06. प्रमाणं त्रिविधमिति -

- | | | | |
|-------------|---------------|---------------|----------------|
| (1) सांख्या | (2) मीमांसकाः | (3) चार्वाकाः | (4) वेदान्तिनः |
|-------------|---------------|---------------|----------------|

07. अनुभूते : प्रामाण्यमिति -

- | | | | |
|-------------|----------------|---------------|---------------|
| (1) भाट्टाः | (2) प्राभाकराः | (3) वैशेषिकाः | (4) चार्वाकाः |
|-------------|----------------|---------------|---------------|

08. सन्निकर्षः द्विविध इति -

- | | | | |
|-------------|-----------|---------------|--------------|
| (1) भाट्टाः | (2) जैनाः | (3) तार्किकाः | (4) सांख्याः |
|-------------|-----------|---------------|--------------|

09. नैयायिकानां मते लौकिकसन्निकर्षः -

- | | | | |
|--------------|------------|-------------|---------------|
| (1) पञ्चविधः | (2) एकविधः | (3) षड्विधः | (4) चतुर्विधः |
|--------------|------------|-------------|---------------|

10. चार्वाकमते प्रमाणम् -

- | | | | |
|---------------|---------------|----------------|-------------|
| (1) त्रिविधम् | (2) द्विविधम् | (3) चतुर्विधम् | (4) एकविधम् |
|---------------|---------------|----------------|-------------|

11. भाट्टमते प्रमाणानि तावत् -

- | | | | |
|-------------|----------|---------|----------|
| (1) चत्वारि | (2) पञ्च | (3) षट् | (4) सप्त |
|-------------|----------|---------|----------|

12. केषां मते मनसो विभुत्वम् -
 (1) सांख्यानां (2) बौद्धानाम् (3) नैयायिकानां (4) भाट्टानाम्
13. संयुक्तादात्म्यसन्निकर्षस्तावत् -
 (1) घटादिषु (2) पृथिव्यादिषु (3) रूपादिषु (4) द्रव्यादिषु
14. प्राभाकरमते सन्निकर्षस्तावत् -
 (1) एकविधः (2) द्विविधः (3) त्रिविधः (4) चतुर्विधः
15. सविकल्पकेन विकल्पो भवति -
 (1) द्विधा (2) त्रिधा (3) चतुर्धा (4) पञ्चधा
16. केन सन्निकर्षेण शब्दत्वं गृह्यते -
 (1) संयुक्तसमवायेन (2) समवेतसमवायेन (3) समवायेन (4) संयोगेन
17. प्रत्यक्षं कल्पनापोढमभ्रान्तमिति -
 (1) बौद्धाः (2) वेदान्तिनः (3) चार्वाकाः (4) तार्किकाः
18. केन सन्निकर्षेण अभावस्य ग्रहणं भवति -
 (1) विशेषणविशेष्येण (2) संयुक्तसमवायेन
 (3) संयुक्तेन (4) समवायेन
19. कतिविधं सन्निकर्षजं ज्ञानम् -
 (1) द्विविधम् (2) चतुर्विधम् (3) षड्विधम् (4) त्रिविधम्

12P/275/31

20. निर्विकल्पकं ज्ञानमिति -

- (1) बौद्धाः (2) तार्किकाः (3) सांख्याः (4) शाब्दिकाः

21. प्रमाणानामनुग्राहकस्तावत् -

- (1) तर्कः (2) हेतुः (3) विषयः (4) प्रत्ययः

22. भाट्टाः व्यतिरेक्यनुमानस्थले कस्य प्रामाण्यमङ्गीकुर्वन्ति -

- (1) अर्थापत्तेः (2) उपमानस्य (3) अनुपलब्धेः (4) शाब्दस्य

23. साक्षात् प्रतीतिः प्रत्यक्षमिति -

- (1) बौद्धाः (2) कापिलाः (3) भाट्टाः (4) प्राभाकराः

24. कति अवयवाः अनुमानप्रमाणे -

- (1) त्रयः (2) चत्वारः (3) पञ्च (4) षट्

25. कस्तावत् स्वाभाविकसम्बन्धः -

- (1) पक्षधर्मता (2) परामर्शः (3) अनुमितिः (4) व्याप्तिः

26. बौद्धमतानुसारमनुमानावयवसंख्या तावत् -

- (1) द्वौ (2) त्रयः (3) चत्वारः (4) पञ्च

27. भाट्टाः व्यतिरेक्यनुमानस्थले कस्य प्रामाण्यमङ्गीकुर्वन्ति-

- (1) अर्थापत्तेः (2) उपमानस्य (3) अनुपलब्धेः (4) शाब्दस्य

28. अन्वयादिव्याप्तिभेदेन अनुमानप्रमाणम् -

- (1) द्विविधम् (2) त्रिविधम् (3) पञ्चविधम् (4) षड्विधम्

29. तर्कस्य कति अङ्गानि -

- (1) चत्वारि (2) पञ्च (3) षट् (4) अष्टौ

30. व्याप्तिज्ञानं तावत् -

- (1) द्विविधम् (2) त्रिविधम् (3) चतुर्विधम् (4) षड्विधम्

31. कति रूपाणि अन्वयव्यतिरेकिहेतोः -

- (1) चत्वारि (2) पञ्च (3) त्रीणि (4) षट्

32. भाट्टमते द्रव्याणि तावत् -

- (1) एकादश (2) दश (3) अष्टौ (4) नव

33. कति द्रव्याणि अवयववन्ति ?

- (1) अष्टौ (2) नव (3) पञ्च (4) षट्

34. तमसो दशमद्रव्यत्वमङ्गीकुर्वाणाः -

- (1) नैयायिकाः (2) प्राभाकराः (3) भाट्टाः (4) सांख्याः

35. मीमांसादृष्ट्या द्रव्यलक्षणम् -

- (1) परिमाणगुणाधारम् (2) गुणवत्त्वम्
(3) नित्यमनेकानुगतम् (4) गुणक्रियावत्त्वम्

36. अशरीरिणस्तावत् -

- (1) जरायुजाः (2) स्वेदजाः (3) उद्भिज्जाः (4) अण्डजाः

12P/275/31

37. केषां मते मोक्षस्य प्रपञ्चसम्बन्धविलयत्वं -

- (1) शांकराणां (2) भाट्टानां (3) नैयायिकानां (4) प्राभाकराणां

38. स्वतः प्रामाण्यमप्रामाण्यञ्चेति -

- (1) सांख्याः (2) नैयायिकाः (3) बौद्धाः (4) मीमांसकाः

39. न्यायमते हेत्वाभासाः -

- (1) द्वौ (2) चत्वारः (3) पञ्च (4) षट्

40. अन्यथा अनुषपत्या यदुपपादककल्पनम् - तत् प्रमाणम् -

- (1) प्रत्यक्षम् (2) अनुमानम् (3) उपमानम् (4) अर्थापत्तिः

41. कति हेत्वाभासाः मीमांसामते -

- (1) चत्वारः (2) पञ्च (3) षट् (4) अष्टौ

42. वाक्यार्थावगमे कारणानि भवन्ति -

- (1) त्रीणि (2) चत्वारि (3) पञ्च (4) षट्

43. कति दृष्टान्ताभासाः -

- (1) षट् (2) पञ्च (3) त्रयः (4) चत्वारः

44. शरीरं तावत् -

- (1) पञ्चविधम् (2) त्रिविधम् (3) द्विविधम् (4) चतुर्विधम्

45. सादृश्यज्ञानजन्यम् -

- (1) प्रत्यक्षम् (2) अर्थापत्तिः (3) अनुमानम् (4) उपमानम्

46. शाब्दं ज्ञानं तावत् -

- (1) पञ्चविधम् (2) द्विविधम् (3) चतुर्विधम् (4) त्रिविधम्

47. अर्थापत्तिप्रमाणम् -

- (1) द्विविधः (2) त्रिविधः (3) चतुर्विधः (4) पञ्चविधम्

48. कतिविधो अनुपलम्भः -

- (1) द्विविधम् (2) त्रिविधम् (3) चतुर्विधम् (4) पञ्चविधः

49. कस्य लक्षणं रूपरहितत्वे सति स्पर्शवत्त्वं -

- (1) तेजसः (2) पृथिव्याः (3) वायोः (4) जलस्य

50. यागस्य कति रूपाणि -

- (1) एकं रूपम् (2) द्वे रूपे (3) त्रीणि रूपाणि (4) चत्वारि रूपाणि

51. विधेः सहकारिप्रमाणानि -

- (1) त्रिणि (2) चत्वारि (3) पञ्च (4) षट्

52. प्रकरणम् कस्य विनियोजकं -

- (1) द्रव्यस्य (2) गुणस्य (3) क्रियायाः (4) सामान्यस्य

12P/275/31

53. प्रयोजनमुद्दिश्य विधीयमानोऽर्थः -

- (1) मोक्षः (2) कामः (3) धर्मः (4) अर्थः

54. श्रुतिप्रमाणं तावत् -

- (1) एकविधम् (2) द्विविधम् (3) त्रिविधम् (4) चतुर्विधम्

55. वाक्यापेक्षया कस्य बलीयस्त्वं -

- (1) लिङ्गस्य (2) प्रकरणस्य (3) स्थानस्य (4) समाख्यायाः

56. शब्दः द्रव्यमिति -

- (1) तार्किकाः (2) भाट्टाः (3) वेदान्तिनः (4) सांख्याः

57. कस्मावत् कर्मस्वरूपमात्रावबोधकः -

- (1) आधिकारविधिः (2) उत्पत्तिविधिः (3) विनियोगविधिः (4) प्रयोगविधिः

58. समभिव्याहारस्तु -

- (1) स्थानम् (2) वाक्यम् (3) श्रुतिः (4) लिङ्गम्

59. वेदस्तावत् -

- (1) पौरुषेयः (2) अपौरुषेयः (3) सर्वज्ञकृतः (4) ईश्वरकृतः

60. वाक्यभेदजनितदोषस्तावत् -

- (1) पदार्थदोषः (2) वाक्यदोषः (3) पददोषः (4) वाक्यार्थदोषः

61. भावना-

- (1) चतुर्विधा (2) त्रिविधा (3) द्विविधा (4) एकविधा

62. सोमेन यजेत इत्यत्र -

- (1) अधिकारविधिः (2) विनियोगविधिः (3) प्रयोगविधिः (4) उत्पत्तिविधिः

63. शाब्दीभावना तावत् -

- (1) अर्थनिष्ठा (2) शब्दनिष्ठा (3) साध्यनिष्ठा (4) साधननिष्ठा

64. इतिकर्तव्यता कस्यामाकाङ्क्षायाम् -

- (1) आकारहितायाम् (2) कथं भावाकाङ्क्षायाम्
(3) केनभावाकाङ्क्षायाम् (4) किं भावाकाङ्क्षायाम्

65. कतिविधः विधिः -

- (1) एकविधः (2) द्विविधः (3) त्रिविधः (4) चतुर्विधः

66. करणाकाङ्क्षायां लिङादिज्ञानस्य कथमन्वयः -

- (1) कारणत्वेन (2) कर्तृत्वेन (3) कार्यत्वेन (4) कर्मत्वेन

67. उपयुक्तस्याकीर्णकरतानिर्वर्तकं कर्म -

- (1) उपयुक्तकर्म (2) प्रतिपत्तिकर्म (3) उपयोक्ष्यमाणकर्म (4) अवघातकर्म

68. कस्तावद्विधिः फलसाम्यबोधकः -

- (1) अधिकारविधिः (2) प्रयोगविधिः (3) नियमविधिः (4) विनियोगविधिः

12P/275/31

69. निषेधानाम् -

- | | |
|----------------------------|-----------------------------|
| (1) अकिञ्चित्करत्वम् | (2) अपुरुषार्थत्वम् |
| (3) पुरुषार्थानुबन्धित्वम् | (4) पुरुषार्थाननुबन्धित्वम् |

70. प्रकरणं तावत् -

- | | | | |
|-------------|---------------|---------------|----------------|
| (1) एकविधम् | (2) द्विविधम् | (3) त्रिविधम् | (4) चतुर्विधम् |
|-------------|---------------|---------------|----------------|

71. द्रव्याद्यनुद्दिश्य केवलं विधीयमानं कर्म -

- | | |
|-----------------------|----------------|
| (1) आरादुपकारकम् | (2) उपकारकम् |
| (3) सन्निपत्योपकारकम् | (4) अनुपकारकम् |

72. कस्य तद्रव्यपदोत् नामधेयत्वम् -

- | | |
|---------------------|----------------------|
| (1) उद्भिद्-शब्दस्य | (2) श्येन-शब्दस्य |
| (3) चित्रा-शब्दस्य | (4) प्रजापति-शब्दस्य |

73. बाधः -

- | | | | |
|------------|--------------|--------------|---------------|
| (1) एकविधः | (2) द्विविधः | (3) त्रिविधः | (4) चतुर्विधः |
|------------|--------------|--------------|---------------|

74. कस्य पशोरनुष्ठानम् औपवस्थे -

- | | |
|-------------------------|-------------------|
| (1) सवनीयस्य | (2) अग्निषोमीयस्य |
| (3) आग्नेयाग्नीषोमीयस्य | (4) आग्नेयस्य |

75. प्रधानक्रमेण योऽङ्गानां क्रम आश्रीयते सः

- | | | | |
|--------------------|--------------|----------------|----------------|
| (1) प्रवृत्तिक्रमः | (2) पाठक्रमः | (3) मुख्यक्रमः | (4) स्थानक्रमः |
|--------------------|--------------|----------------|----------------|

76. वैश्वदेवशब्दस्य किं स्वरूपत्वं तत्प्रख्यशास्त्रात् -
 (1) कर्मनामधेयत्वम् (2) यागनामधेयत्वम्
 (3) देवतानामधेयत्वम् (4) द्रव्यनामधेयत्वम्
77. फलसम्बन्धोत्तरकालीनत्वम् -
 (1) अध्याहारत्वम् (2) अपवादत्वम् (3) उपलक्षणत्वम् (4) अतिदेशत्वम्
78. पाठसादेश्यात् शुन्धनमन्त्रः कस्य पात्राङ्गम् -
 (1) चमसस्य (2) गोदोहनस्य (3) पुरोडाशस्य (4) सान्नाय्यस्य
79. किं नाम देशसामान्यम् -
 (1) वाक्यम् (2) प्रकरणम् (3) स्थानम् (4) लिङ्गम्
80. किमर्थं प्रोक्षणादिकं कर्म -
 (1) अदृष्टार्थम् (2) दृष्टार्थम् (3) मानसिकम् (4) प्रायोगिकम्
81. प्रयोगप्राशुभावबोधको विधिः -
 (1) नियमविधिः (2) प्रयोगविधिः (3) उत्पत्तिविधिः (4) विनियोगविधिः
82. अङ्गजातं तावत् -
 (1) द्विविधम् (2) त्रिविधम् (3) चतुर्विधम् (4) षड्विधम्
83. कस्य तावत् पक्षेऽप्राप्तस्य प्रापकत्वम् -
 (1) नियमविधेः (2) अपूर्वविधेः (3) विनियोगविधेः (4) उत्पत्तिविधेः

12P/275/31

84. समाख्या -

- (1) एकविधा (2) द्विविधा (3) त्रिविधा (4) चतुर्विधा

85. अधीत्य स्नायादिति कस्य वचनम् -

- (1) श्रुतेः (2) पुराणस्य (3) काव्यस्य (4) स्मृतेः

86. जैमिनीयं धर्मलक्षणम् -

- (1) यतोऽभ्युदयनिः श्रेयससिद्धि (2) चोदनालक्षणोऽर्थः
(3) अपूर्वम् (4) यागादिरेव

87. श्येनादियागानाम् -

- (1) अर्थत्वम् (2) अनर्थत्वम्
(3) अर्थानर्थोभयात्मकत्वम् (4) अनुभयात्मकत्वम्

88. मीमांसामते अप्रामाण्यम् -

- (1) स्वतः (2) परतः (3) विमर्शात्मकम् (4) निश्चयात्मकम्

89. ब्राह्मणमुपनयीत -

- (1) ग्रीष्मे (2) वसन्ते (3) शरदि (4) हेमन्ते

90. मीमांसादर्शनसूत्रकारः -

- (1) शबरस्वामी (2) जैमिनिः (3) गौतमः (4) कपिलः

91. प्रतिषेधस्तु कुत्र प्रवर्तते -

- (1) नाम्ना सह नञ् (2) उत्तरपदेन सह नञ्
(3) क्रियया सह नञ् (4) पूर्वपदेन सह नञ्

92. स्वर्गेच्छाजनितो यागविषयो यः प्रयत्नः सः -
 (1) भावना (2) पुरुषार्थः (3) मोक्षः (4) धर्मः
93. पूर्वमीमांसायाः विषयः -
 (1) ब्रह्माख्यः (2) अधर्माख्यः (3) धर्माख्यः (4) जीवाख्यः
94. प्रामाण्यं मीमांसादृष्ट्या -
 (1) परतः (2) स्वतः (3) उभयात्मकम् (4) अनुभयात्मकम्
95. श्येनयागोक्ता हिंसा -
 (1) साध्यगता (2) साधनगता (3) इतिकर्तव्यतागता (4) उपायगता
96. किमभिप्रेतं चोदनाशब्देन -
 (1) निवर्तकम् (2) प्रवर्तकम् (3) उदासीनम् (4) दानम्
97. अधीत वेदस्य जिज्ञासा -
 (1) द्विविधा (2) त्रिविधा (3) चतुर्विधा (4) पञ्चविधा
98. अर्थवादस्तावत् कतिविधः न्यायप्रकाशसम्मतः -
 (1) द्विविधः (2) चतुर्विधः (3) षड्विधः (4) अष्टविधः
99. केन प्रणीतः मीमांसान्यायप्रकाशः -
 (1) पार्थसारथिमिश्रेण (2) आपदेवेन
 (3) कृष्णयन्वना (4) कुमारिलभट्टेण

12P/275/31

100. पूर्वमीमांसासूत्रभाष्यकारः -

- (1) शङ्कराचार्यः (2) वात्स्यायनः (3) वाचस्पतिमिश्रः (4) शबरस्वामी

101. केषामधिकारोऽस्ति अग्निहोत्रादिकर्मसु -

- (1) अनधीतवेदानाम् (2) सर्वेषाम्
(3) शुद्राणाम् (4) त्रैवर्णिकानाम्

102. अवघातः कुत्र नियम्यते -

- (1) दर्शपूर्णमासापूर्वे (2) कारिर्यपूर्वे
(3) सोमयागापूर्वे (4) ज्योतिष्टमापूर्वे

103. चित्रायगे चित्राशब्दस्तावत् -

- (1) गुणविधिपरकः (2) अर्थवादपरकः
(3) नियमविधिपरकः (4) कर्मनामधेयपरकः

104. ऊहादीनाम् -

- (1) देवतात्वम् (2) अर्थवादत्वम् (3) मन्त्रत्वम् (4) नामधेयत्वम्

105. विद्वानग्निं चिनुते-इत्यत्र चिनुते इति पदेन किं विधीयते -

- (1) यागः (2) कर्म (3) गुणः (4) अग्निसंस्कारः

106. शास्त्रदीपिकाकारः -

- (1) कुमारिलभट्टः (2) शबरस्वामी (3) पार्थसारथिमिश्रः (4) प्रभाकरमिश्रः

107. प्रमाणं तावद् धर्मस्य कृते -

- (1) प्रत्यक्षम् (2) अनुमानम् (3) शाब्दः (4) अर्थपत्तिः

108. चातुर्मास्येषु प्रथमे पर्वणि यागास्तावत् -

- (1) दश (2) एकादश (3) अष्टौ (4) नव

109. कस्य सूक्ष्मादिविषयेषु प्रामाण्यम् -

- (1) प्रत्यक्षस्य (2) अनुमानस्य (3) शब्दस्य (4) अर्थापत्तेः

110. मोक्षावस्थायां किमधिगम्यते -

- (1) आनन्दः (2) निरानन्दः (3) प्रपञ्चः (4) सुखं

111. राजसूये अधिकारः -

- (1) वैश्यानाम् (2) क्षत्रियाणाम् (3) ब्रह्मणानाम् (4) त्रैवर्णिकानाम्

112. नैवारचरोः -

- (1) यागत्वम् (2) उपधानत्वम् (3) पुरुषार्थत्वम् (4) आलम्भनत्वम्

113. किमन्तरिन्द्रियम् -

- (1) त्वक् (2) रसना (3) श्रोत्रम् (4) मनः

114. बहिरादिशब्दानाम् -

- (1) अर्थवादत्वम् (2) जातिवाचकत्वम्
(3) संस्कारवाचकत्वम् (4) आकृतिवाचकत्वम्

12P/275/31

115. भावनातावत् -

- (1) द्विविधा (2) त्रिविधा (3) चतुर्विधा (4) षड्विधा

116. कुत्रान्वयः संमार्जनादीनाम् -

- (1) अप्रधाने (2) प्रधाने (3) उभयात्मके (4) अनुभायात्मके

117. शब्दार्थयोः सम्बन्धः -

- (1) अस्वाभाविकः (2) कृतकः (3) औत्पत्तिकः (4) आकस्मिकः

118. किमस्मि कर्मत्वं स्तोत्रशस्त्रयोः -

- (1) अमुख्यकर्मत्वम् (2) प्रधानकर्मत्वम्
(3) अप्रधानकर्मत्वम् (4) गुणकर्मत्वम्

119. संख्यायाः पृथक्त्वानिवेशात् किं स्यात् -

- (1) द्रव्यभेदः (2) गुणभेदः (3) कर्मभेदः (4) मन्त्रभेदः

120. क्षणिकविज्ञानवादी तावत् -

- (1) वैभासिकः (2) माध्यमिकः (3) योगाचारः (4) सौत्रान्तिकः

121. अनुष्ठानसादेश्यात् पशुधर्माणाम् -

- (1) सवनीयाङ्गत्वम् (2) अग्रीषोमीयाङ्गत्वम्
(3) न कस्याप्यङ्गत्वम् (4) अग्रीसोमीयसवनीयाङ्गत्वम्

122. परस्वत्वोपपादनम् -

- (1) होमः (2) यागः (3) प्रतिग्रहः (4) दानम्

123. सामधेनीष्वागन्तूनां निवेशः -

- (1) आदौ (2) अन्ते (3) मध्ये (4) अन्तरा

124. स्वर्गादिफलानाम् -

- (1) पुरुषार्थत्वम् (2) क्रत्वर्थत्वम् (3) उभयार्थत्वम् (4) अनुभयार्थत्वम्

125. क्रमस्तावत् -

- (1) चतुर्विधः (2) द्विविधः (3) पञ्चविधः (4) त्रिविधः

126. किमर्थं नानाबीजेषु एकमुलूखलम् -

- (1) व्यवहारात् (2) विभवात् (3) सम्भवात् (4) प्रयोगात्

127. सप्तदशारत्निः -

- (1) वाजपेयस्य (2) ज्योतिष्टोमस्य
(3) वाजपेयाङ्गभूतस्य भूपस्य (4) दर्शपूर्णमासयोः

128. पशोः शकृत्लोहितकर्म -

- (1) प्रतिपत्तिकर्म (2) यागार्थम् (3) अप्रयोजकम् (4) प्रयोजकम्

129. वेदशब्देन किमभिप्रेताम् -

- (1) मन्त्रब्राह्मणवाक्यानि (2) अर्थवादवाक्यानि
(3) मन्त्रवाक्यानि (4) ब्राह्मणवाक्यानि

130. शास्त्रदीपिकामतानुसारं शेषत्वं तावत् -

- (1) उपकारस्य (2) पारार्थ्यस्य (3) विध्यन्तविहितस्य (4) प्रयोज्यस्य

12P/275/31

131. मन्द्राभिभूत्यधिकरणे तृप्ते :

- (1) दृष्टार्थत्वम् (2) अदृष्टार्थत्वम् (3) उभयार्थत्वम् (4) पुरुषार्थत्वम्

132. त्यागांशस्य-

- (1) अदृष्टार्थत्वम् (2) दृष्टार्थत्वम् (3) अनुभयत्वम् (4) दृष्टादृष्टार्थत्वम्

133. प्रस्तरं प्रहरति - इति प्रस्तरप्रहरणस्य कालविधिः -

- (1) दर्शपूर्णमासयोः (2) वाजापेये (3) ज्योतिष्टोमे (4) सोमयागे

134. कस्यापेक्षया स्थानस्य प्राबल्यम् -

- (1) समाख्यायाः (2) श्रुतेः (3) लिङ्गस्य (4) वाक्यस्य

135. दर्शपूर्णमासप्रकरणे हस्तावनेजनं -

- (1) मनः प्रणिधानार्थम् (2) अदृष्टार्थम्
(3) हस्तसंस्कारार्थम् (4) शरीरशोधनार्थम्

136. पुरोडाशस्य चतुर्धाकरणम् -

- (1) सर्वेषाम् (2) ऐन्द्राग्न्यस्य (3) अग्नीसोमीयस्य (4) आग्नेयस्य

137. पारदौर्बल्यं तावत् श्रुत्यादीनात् -

- (1) शब्दार्थविप्रकर्षात् (2) शब्दविप्रकर्षात्
(3) वाक्यविप्रकर्षात् (4) अर्थविप्रकर्षात्

138. प्रयाजादिकार्यस्य प्रतिनिधिः -

- (1) अस्ति (2) नास्ति (3) क्रियान्तरे अस्ति (4) कदाचिदस्ति

139. दशपूर्णमासे सोमविकाराणां -

- | | |
|------------------------|------------------------|
| (1) अन्तरा कर्त्तव्यम् | (2) अनन्तराकर्त्तव्यम् |
| (3) प्रागकर्त्तव्यम् | (4) प्राक् कर्त्तव्यम् |

140. बलीयस्त्वम् -

- | | | | |
|----------------|--------------------|------------------|-----------------|
| (1) क्रमपाठस्य | (2) ब्राह्मणपाठस्य | (3) मन्त्रपाठस्य | (4) अक्रमपाठस्य |
|----------------|--------------------|------------------|-----------------|

141. पूतिकस्य प्रतिनिधित्वम् -

- | | | | |
|-------------|--------------|---------------------|---------------|
| (1) सोमयागे | (2) दर्शयागे | (3) ज्योतिष्टोमयागे | (4) श्येनयागे |
|-------------|--------------|---------------------|---------------|

142. केऽधिकारिणः दशपूर्णमासादियागकर्मसु -

- | | | | |
|-------------|--------------|------------|------------|
| (1) पुरूषाः | (2) स्त्रियः | (3) अन्धाः | (4) वधिराः |
|-------------|--------------|------------|------------|

143. उपसदः संख्या -

- | | | | |
|----------|---------|----------|-----------|
| (1) पञ्च | (2) षट् | (3) सप्त | (4) अष्टौ |
|----------|---------|----------|-----------|

144. कस्य कर्त्तृकत्वमाधानकर्मणि -

- | | | | |
|-----------|--------------|------------|-----------------|
| (1) पुंसः | (2) स्त्रियः | (3) पुंसोः | (4) सस्त्रीकस्य |
|-----------|--------------|------------|-----------------|

145. दर्शादौ कर्त्तुः -

- | | | | |
|-------------|---------------|---------------|---------------|
| (1) एकत्वम् | (2) द्वित्वम् | (3) त्रित्वम् | (4) अनेकत्वम् |
|-------------|---------------|---------------|---------------|

146. आगन्तुकानां निवेशः -

- | | | | |
|-----------|-----------|---------|------------|
| (1) अन्ते | (2) मध्ये | (3) आदौ | (4) अन्तरा |
|-----------|-----------|---------|------------|

12P/275/31

147. अग्निष्टोमसंस्था -

- | | |
|------------------------|-------------------------|
| (1) सर्वसंस्थान्तर्गता | (2) संस्थान्तरान्तर्गता |
| (3) क्रतुभावनान्तर्गता | (4) क्रतुभावनान्तर्गता |

148. प्रयाजास्तावत् -

- | | | | |
|----------------|-----------------|------------------|------------------|
| (1) एकादशविधाः | (2) द्वादशविधाः | (3) चतुर्दशविधाः | (4) त्रयोदशविधाः |
|----------------|-----------------|------------------|------------------|

149. विकृतानामैन्द्राग्न्यादीनाम् -

- | | |
|-------------------------|-----------------------|
| (1) सद्यः - कालत्वम् | (2) बहु - अहःकालत्वम् |
| (3) द्वि - अहः कालत्वम् | (4) त्रि-अहः कालत्वम् |

150. कस्मिन् यागे पञ्चशरावोदननिर्वपनम् -

- | | |
|----------------------|---------------------|
| (1) दर्शपूर्णमासयागे | (2) चित्रायागे |
| (3) सोमयागे | (4) ज्योतिष्टोमयागे |

अभ्यर्थियों के लिए निर्देश

(इस पुस्तिका के प्रथम आवरण पृष्ठ पर तथा उत्तर-पत्र के दोनों पृष्ठों पर केवल नीली-काली बाल-प्वाइंट पेन से ही लिखें)

1. प्रश्न पुस्तिका मिलने के 10 मिनट के अन्दर ही देख लें कि प्रश्नपत्र में सभी पृष्ठ मौजूद हैं और कोई प्रश्न छूटा नहीं है। पुस्तिका दोषयुक्त पाये जाने पर इसकी सूचना तत्काल कक्ष-निरीक्षक को देकर सम्पूर्ण प्रश्नपत्र की दूसरी पुस्तिका प्राप्त कर लें।
2. परीक्षा भवन में लिफाफा रहित प्रवेश-पत्र के अतिरिक्त, लिखा या सादा कोई भी खुला कागज साथ में न लायें।
3. उत्तर-पत्र अलग से दिया गया है। इसे न तो मोड़ें और न ही विकृत करें। दूसरा उत्तर-पत्र नहीं दिया जायेगा। केवल उत्तर-पत्र का ही मूल्यांकन किया जायेगा।
4. अपना अनुक्रमांक तथा उत्तर-पत्र का क्रमांक प्रथम आवरण-पृष्ठ पर पेन से निर्धारित स्थान पर लिखें।
5. उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर पेन से अपना अनुक्रमांक निर्धारित स्थान पर लिखें तथा नीचे दिये वृत्तों को गाढ़ा कर दें। जहाँ-जहाँ आवश्यक हो वहाँ प्रश्न-पुस्तिका का क्रमांक तथा सेट का नम्बर उचित स्थानों पर लिखें।
6. ओ० एम० आर० पत्र पर अनुक्रमांक संख्या, प्रश्नपुस्तिका संख्या व सेट संख्या (यदि कोई हो) तथा प्रश्नपुस्तिका पर अनुक्रमांक और ओ० एम० आर० पत्र संख्या की प्रविष्टियों में उपरिलेखन की अनुमति नहीं है।
7. उपर्युक्त प्रविष्टियों में कोई भी परिवर्तन कक्ष निरीक्षक द्वारा प्रमाणित होना चाहिये अन्यथा यह एक अनुचित साधन का प्रयोग माना जायेगा।
8. प्रश्न-पुस्तिका में प्रत्येक प्रश्न के चार वैकल्पिक उत्तर दिये गये हैं। प्रत्येक प्रश्न के वैकल्पिक उत्तर के लिए आपको उत्तर-पत्र की सम्बन्धित पंक्ति के सामने दिये गये वृत्त को उत्तर-पत्र के प्रथम पृष्ठ पर दिये गये निर्देशों के अनुसार पेन से गाढ़ा करना है।
9. प्रत्येक प्रश्न के उत्तर के लिए केवल एक ही वृत्त को गाढ़ा करें। एक से अधिक वृत्तों को गाढ़ा करने पर अथवा एक वृत्त को अपूर्ण भरने पर वह उत्तर गलत माना जायेगा।
10. ध्यान दें कि एक बार स्याही द्वारा अंकित उत्तर बदला नहीं जा सकता है। यदि आप किसी प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहते हैं, तो संबंधित पंक्ति के सामने दिये गये सभी वृत्तों को खाली छोड़ दें। ऐसे प्रश्नों पर शून्य अंक दिये जायेंगे।
11. रफ कार्य के लिए प्रश्न-पुस्तिका के मुखपृष्ठ के अंदर वाला पृष्ठ तथा उत्तर-पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ का प्रयोग करें।
12. परीक्षा के उपरान्त केवल ओ एम आर उत्तर-पत्र परीक्षा भवन में जमा कर दें।
13. परीक्षा समाप्त होने से पहले परीक्षा भवन से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
14. यदि कोई अभ्यर्थी परीक्षा में अनुचित साधनों का प्रयोग करता है, तो वह विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित दंड का/की, भागी होगा/होगी।